प्राथमिक समूहों का महत्व या प्रकार्य या भूमिका
(Importance of Functions or Role of Primary Group)

प्राथमिक समूह अत्यधिक महत्वपूर्ण होते है। एक तरफ इसकी सहायतासे एक जैविकीय प्राणी सामाजिक प्राणी बनता है और दूसरी तरफ समाज के संदर्भ में इसके कार्य अद्वितीय है। मैकाइवर एंव पेज ने प्राथमिक समूह के संदर्भ में लिखा है कि — "यह (प्राथमिक समूह) मानव की, मानव के लिए और मानव की समाज के लिए अनिवार्य आवश्यकता की अधिकतम पूर्ती करती है।" प्राथमिक समूह के महत्व या प्रकार्य या भूमिका निम्नलिखित है:—

(1) समाजीकरण में सहायक (Helpful of Socialization):—

व्यक्ति जन्म से न तो सामाजिक होता है और न समाज विरोधी, वह सिर्फ एक जैविकीय प्राणी होता है। समाजीकरण के माध्यम से उसे समाज के अनुकूल बनाया जाता है। प्राथमिक समूह की समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यक्ति के अपने जीवन का प्रारम्भिक काल प्राथमिक समूह से संबंधित होता है। जैसे — परिवार, पड़ोस एंव क्रीड़ा-समूह के सम्पर्क में व्यक्ति सर्वप्रथम आता है। इसके सम्पर्क में व्यक्ति सामाजिक आदतों को स्वीकारता है। फलस्वरूप व्यक्ति में सामाजिक गुणों एंव अन्य लक्षणों का विकास होता है। अतः समाजीकरण में प्राथमिक समूह सहायक होता है।

(2) व्यक्ति के निर्माण में सहायक (Helpful in formation of personality):—

प्राथमिक समूह व्यक्तित्व के निर्माण की आधारशिला है। इसका प्रभाव बच्चें पर जन्म के साथ शुरू हो जाता है।

सर्वप्रथम बच्चा परिवार के सम्पर्क में आता है, वहीं से भाषा, आचार - विचार, रीति - रिवाज आदि को सीखता है। फिर वह पड़ोस या खेल - समूह के सम्पर्क में आता है। प्राथमिक समूह के अन्तर्गत घनिष्ठ व व्यक्तिगत संबंध बनते हैं। इसी क्रम में उनमें सहयोग, सहनशीलता, हम की भावना आदि का विकास होता है। ये सारे गुण व्यक्तित्व के आधार हैं।

(3) भावात्मक सुरक्षा में सहायक (Helpful in Emotional security) :—

मानव जीवन समस्याओं से घिरा है। इस दौर में व्यक्ति को कभी असफलता हाथ आती है, कभी संघर्ष करना होता है और मन दबाकर समझौता भी करना होता है। इस क्रम में व्यक्ति निराशा को प्राप्त करता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को ऐसे समूह की आवश्यकता है जहाँ पर अपनी भावना की बातों को रख सके, जहाँ उसकी भावना का आदर हो, ताकि व्यक्ति के निराश मन को शान्ति मिले। यह समूह व्यक्ति को भावात्मक सुरक्षा प्रदान कर निराश मन को आशावादी बनाता है।

(4) सांस्कृतिक सीख में सहायक (Helpful in cultural learning) :—

प्राथमिक समूह का एक महत्वपूर्ण कार्य व्यक्ति को अपनी संस्कृति से अवगत कराना है। प्राथमिक समूह सांस्कृतिक विशेषताओं को बच्चों में भरती है। परिवार, पड़ोस व खेल - समूह के माध्यम से व्यक्ति अपने जनरीति, लोकाचार, प्रथा, नैतिकता, परम्परा, रीति - रिवाज, धर्म आदि से अवगत होता है। इन सांस्कृतिक सीखों से व्यक्ति सामाजिक प्राणी

बनता है। साथ ही इन समूहों के माध्यम से संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती है।

(5) सामाजिक अनुकूलन में सहायक (Helpful in Social Adjustment):—

व्यक्ति और समाज में अन्योन्याश्रय संबंध है। एक के अभाव में दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति का समाज के साथ अनुकूलन होना आवश्यक है। इस कार्य की पूर्ति प्राथमिक समूह करता है। यह हमें बताता है कि समाज क्या है, उसके नियम व आदर्श क्या है, उसे बनाए रखना क्यों आवश्यक है आदि-आदि। व्यक्ति सामाजिक नियमों व आदर्शों को अपनाता है, फलस्वरूप उसे सामाजिक अनुकूलन में सहायता मिलती है।

(6) सामाजिक नियंत्रण में सहायक (Helpful in Social Control):—

सामाजिक नियंत्रण का एक महत्वपूर्ण साधन प्राथमिक समूह है। यह न केवल भाषा व संस्कृति की शिक्षा देता है, बल्कि व्यक्ति के व्यवहार पर नियंत्रण भी रखता है। हम सामाजिक नियमों का पालन करें, सभी का आदर करें, अनुशासित रहें, कानून का पालन करें, इन सब बातों के लिए प्राथमिक समूह हमें दबाव डालता है। इस प्रकार, परिवार, पड़ोस व खेल-समूह के व्यक्तियों के साथ हमारा संबंध अत्यधिक घनिष्ठ व व्यक्तिगत होता है। अतः इसका प्रभाव व्यक्ति पर अधिक होता है। फलस्वरूप व्यक्ति प्राथमिक

समूह के निर्देशों का पालन करता है और उसके विरुद्ध नहीं जा पाता। यह नियंत्रण कभी प्यार - स्नेह, त्याग, हास्य - व्यंग्य, सीख, अनुकरण आदि अनेक साधनों के उपयोग द्वारा सम्पन्न किया जाता है।

(7) स्वस्थ मनोरंजन में सहायक (Helpful in Healthy Recreation):— प्राथमिक समूह मनोरंजन का केन्द्र रहा है। समूह के सदस्य एक दूसरे के साथ बात-चीत, कथा-कहानी, हँसी - मजाक आदि के माध्यम से मनोरंजन पाते हैं। इसी तरह पूजा - पाठ, कीर्तन - भजन, विवाह - शादी आदि मनोरंजन प्रदान करते हैं। खेल समूह में भी अच्छा खासा मनोरंजन होता है। वर्तमान में जब से घरों में टेलीविजन का आगमन हुआ तब से परिवार और अधिक मनोरंजन का एक प्रधान केन्द्र बन गया है।

(8) लोकाचारों की आधारशिला (Breeding Ground of Mores):— प्राथमिक समूह का एक महत्वपूर्ण कार्य लोकाचार के निर्माण के सन्दर्भ में है। सामाजिक जीवन से संबंधित अनेक लोकाचार बने हुए हैं, उनमें कुछ प्राथमिक समूहों की देन है। हमें पारिवारिक जिम्मेदारी निभानी चाहिए, पड़ोसी धर्म का पालन करना चाहिए आदि लोकाचारों का जन्म प्राथमिक समूह के माध्यम से हुए है।

उपरोक्त विवेचनाओं से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक समूह मानव के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्यों को करते हैं। इसलिए इसे 'मानव स्वभाव की पोषिका' (Nursery of Human Nature) कहा जाता है।